A–589

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

BAJY–201

जातक शास्त्र एवं फलादेश के सिद्धान्त

कला में स्नातक (ज्योतिष) बी.ए.

द्वितीय वर्ष, सत्र 2024 (June)

समय : 2:00 घंटा पूर्णांक : 70

नोट : – यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट : – खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. मानव जीवन में जातक शास्त्र की क्या उपयोगिता है ? प्रकाश डालिए।

2. मानव जीवन में ग्रहों का प्रभाव कितना सार्थक है ? उल्लेख कीजिए।

3. मंगल, शनि, राहु ग्रहों का तृतीय, षष्ठ अष्टम, एकादश द्वादश भावों में पड़ने वाले प्रभाव का उल्लेख करें।

4. योगिनी दशा में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु ग्रहों के द्वारा होने वाली शुभाशुभ घटनाओं का उल्लेख करें।

5. ग्रहों की दृष्टि का उल्लेख करते हुए प्रकाश डालें।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट : – खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. द्वितीय, पञ्चम, नवम, एकादश भाव के कारक ग्रहों का उल्लेख करें। और इन भावों में पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करें।

2. बृहस्पति, शुक्र, शनि, ग्रहों के स्वरूप का उल्लेख करते हुए प्रकाश डाले।

3. प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम भावस्थ द्विग्रहादि योग का विवेचन करें।

4. भावबल से क्या अभिप्राय है ? प्रकाश डालिए।

5. विंशोत्तरी दशा से आप क्या समझते हैं ? विवेचन करें।

6. सूर्यादि ग्रहों की नैसर्गिक एवं तात्कालिक मैत्री का उल्लेख करें।

7. सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि ग्रहों की अन्तर्दशा का प्रतिपादन करें।

8. तृतीय, षष्ठ, एकादश, द्वादश भावों से विचारणीय विषयों का प्रतिपादन करें।

****